206
H

राष्ट्रीय अभिलेखागार पुस्तकालय
NATIONAL ARCHIVES LIBRARY
भारत सरकार
Government of India
नई दिल्ली
New Delhi

1954
10/4

आह्वानांक Call No.
अवाप्ति सं० Acc. No. 206

॥ बन्देमातरम ॥

# आजादीकी गर्जना

उर्फ

## बेकसों की आह

IMPERIAL RECORD
RECEIVED.
30 MAR 1931
DEPARTMENT

लेखक व प्रकाशकः—

गंगा प्रसाद

सदरबाजार-कानपुर ।

प्रथमबार २००० ❋ मूल्य )॥

इस पुस्तक का सर्वाधिकार प्रकाशकने स्वाधीन रक्खा।

V/ मौ।
P 0886 A3

# ❀ आजादी की गर्जना ❀

॥ गजल ॥

शहर बलिया में जनता सताई गई।
अत्याचार की धूम मचाई गई ॥
शेर–सनतीसचार अगस्तका यहहाल हैसुन लीजिये
महाबीर दलजलूसहै अबइसको जानेदीजिये।
दफा एकसौ चवालिस लगाई गई ॥१॥
शैर-आम पबलिगमें हुवा बसशोर इसकानूनका ॥
चढ़रहा था पाप उनपे बेकसों के खून का।
शान्ति प्रजापर लाठी चलाई गई ॥२॥
शैर-जारही थी भीड़भारी राष्ट्रीय झंडा लिये।

NATIONAL ARCHIVES LIBRARY
GOVT. OF INDIA
No. 806
Date 3.12.71

उस वीर सेना आरही थी हाथमें डंडा लिये ॥
पुलिस वालों से लाठी पिटाई गई ॥३॥
शैर–हिन्द के वासी कलक्टर औरहिन्दू जातिहै।
अपने स्वारथ के लिये कैसा किया उतपातहै ॥
तर्स उनको ज़रा भी न आई गई ॥४॥
शैर–सैकड़ों घायल हुये हैं गोलियों की मारसे।
आसमां तक हलउठा उन विदेशियों कीमारसे॥
माता बहनों कि इज्ज़त लुटाई गई ॥५॥

॥ रागनी ॥

करे भारत की ख्वारी हैरे।
ज़ुल्म अबतो सरकारी हैरे ॥
दो०–करें बेकशों पर ज़ुल्म परदेशी खूंख्वार।

भारत के बीरो ज़रा हो जावो हुशियार ॥
आई मरने की बारी हैरे ॥१॥
दो०-सम्भरो बीरो जगपड़ा नहिं अरसे का काम
हम गरीब का कर रहे हैंगे काम तमाम ॥
खींच लो आह दुधारी हैरे ॥२॥
दो०-पकड़ जेहल भेजे तुम्हें होना मत रंजूर ।
गले तौक लेना पहन करना बेड़ी मंजूर ॥
सदा गांधी झनकारी हैरे ॥३॥
दो०-घबड़ाना दिल में नहीं ऐबीरो सरदार ।
देस धर्म के लिये तुम चढ़ जाना जी दार ॥
नाम हो जगमें भारी हैरे ॥४॥
दो०-माता मेरी कहरही सुनो बीर धर ध्यान ।
भारत के पीछे चहे जाय चली भी जान ॥

मदद को कृष्ण मुरारी हैरे ॥५॥
जुलम अबतो शरकारी हैरे ।

॥ सोहनी ॥

भारत के पुत्रो सर्दार ।
आलस छोड़ो हो हुशियार ॥
हिन्दू मुसलिम और इसाई
हैंगे हम सब दोनों भाई ॥
गुसताखी को करो विदाई ।
सब मिल करो खद्दर प्रचार ॥
आलस छोड़ो हो हुशियार ।
खद्दर के कपड़े पहिन कर एक काम कीजिये ॥
सत्याग्रही बनो ये कहन मान लीजिये ।
स्वयम निमक बनाना दिलमें ठान लीजिये ॥
इससे उन्नती होयगी यह जान लीजिये ॥
निमक बनानें चलो जी यार ।

दिल में यह कर लीजे बिचार ॥

टेक्स अगर मागे सकार ।

कीजे साफ़ २ इजहार ॥

आलस छोड़ो हो हुशियार ।

सत्याग्रह बिरोधियों को खूब बकने दीजिये ।

उनकी बाते सुनने से नर्फत हमेसा कीजिये ॥

गरतुम्हें समझायें तो उनको ये समझा दीजिये ।

तुमभी नमक बनाने चलो ये हिदायत कीजिये

नमक बनाऊँ जनाब आला ।

सत्याग्रह में बन मतवाला ॥

अगर सतावे पुलीस बाला ।

कोड़ों से जो मारे मार ॥

मार खाबो न खावो अहार ॥

अलस छोड़ो हो हुशियार ॥

मार गाली और सजायें सब सहन करलीजिये ।
परदेशियों के जुल्म को दिलमे रहम करलीजिये ॥
महत्मागांधी की बातें और कहन करलीजिये ।
जितना बातें सुन तेजावो जेहन में धरलीजियो ॥
बनो सत्याग्रही लगाके ध्यान ।

वरना होय महा अपमान ॥

अर्ज हमारी लोजेमान ।

माधो सभा में कहे ललकार ॥

भारत के पुत्रो सर्दार ।

॥ गज़ल ॥

संसार जानता है हमको नहीं बताना ।

हम बेकसों ने देखे हैं राज जोलिमाना ॥
तै मूरलंग की भी देखी थी हमाने कूवत ।
औरंग जेब का भी देखा था अबो दाना ॥
वह दृष्य नादिरी का आंखोंमे फिर रहा है ।
देखा था चापलूसोंका मालोजर खजाना ॥
तुगलक के पीतलोंका सिका था, हमने देखा ।
जंगल मे घेर करके रैयत क खूं बहाना ॥
जलियान वालेबागकी हत्याहै हमनेदेखी ।
देखा है कायरों का शेरो वशर कहाना ॥
देखीहै सोलापुर में वह फौजका हुकूमत ।
प्यारी गरीब जनता पर गोलियां चलाना ॥
कगज के सिक्केउड़ते अबतो हरेक घरमें ।
सोनाबचांदी काअब बिलकुल नही ठिकाना ॥

प्रेम प्रिंटिंग प्रेस कानपुर ।